

आम ज़िन्दगी की मजेदार कहानियाँ



होलार पुक्क

आम जिन्दगी की मजेदार कहानियाँ

होलर पुक

अनुवादक : मीनाक्षी
आवरण एवं रेखांकन : रामकाय
आजपे



अनुराग ट्रस्ट

सर्वसिक्खर सुरक्षित

मूल्य : 20.00 रुपये

प्रथम संस्करण : 2004

द्वितीय संस्करण : जनवरी 2008

पुनर्मुद्रण : जनवरी 2010

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट

डी - 68, मिटलामनगर

लखनऊ - 226020

लेआउट टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रोग्राम, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : डिजिटल प्रिण्टर्स, 528/एल-28, सर्वसिक्खर, लखनऊ

चीड़-शंकु की घमासान लड़ाई



चीड़-शंकु ऊँचे-ऊँचे चीड़ वृक्षों के बीच बौराये कीट की तरह उड़ रहे थे जो जब भी किसी से टकराते, गुस्से में जैसे डंक सा मार देते।

यूँ लगता था, जैसे तुषार के नेतृत्व वाली टुकड़ी में बेहतर निशानेबाज थे क्योंकि रामू की टुकड़ी पीछे हटने पर मजबूर कर दी गयी थी।

भयंकर शोर मचाते वे दुश्मनों के पीछे भागे। लेकिन तभी आश्चर्य से ठिठक गये। जुगल भागा नहीं! यह कौन-सी रणनीति थी?

“मैं तुम्हारे पाले में आना चाहता हूँ!” जुगल जल्दी से बोल पड़ा।

“ठीक है, आना चाहते हो तो आ जाओ,” टोली के नायक तुषार ने संक्षिप्त जवाब दिया।

खदेड़ना जारी रहा। दूसरों के साथ जुगल भी खदेड़ने में लगा हुआ था और गला फाड़कर चिल्ला रहा था।

कुछ देर बाद खदेड़ने वालों को अपने दुश्मनों का दूर-दूर तक कोई नाम-निशान

दिखायी नहीं पड़ा।

तुषार ने अपने लड़कों को यह पता करने के लिए भेजा कि कहीं वे लोग बायीं तरफ वाले शरपत के झुरमुटों में न घात लगाकर बैठें हों या दाहिनी ओर की घनी झाड़-झंखाड़ों के बीच रेंगते हुए न सरक रहे हों।

उनका कहीं अता-पता न था। कोई निशान तक न था।

और फिर अचानक ही, बिल्कुल अनपेक्षित रूप से दुश्मन ने उन पर हल्ला बोल दिया। इससे भगदड़ जैसी स्थिति मच गई। चीड़-शंकु सरसराते हुए कभी दायें दिशा से आ रहे थे, कभी बायीं ओर से आ रहे थे। बड़े-बड़े चीड़-शंकु जब शरीर से टकराते चमड़ी दर्द से टीस उठती। सबसे बुरी बात यह हुई कि तुषार के आदमियों का गोला-बारूद चुकने लगा था। खदेड़ने के जोश में, उन्होंने जो छोटा-सा भंडार अपने कमीजों में रख छोड़ा था उसे वे इस्तेमाल कर चुके थे।

तुषार की टोली के पास पीछे हटने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता न बचा था। रामू के सैनिक अपने छिपने की जगहों से कूद कर बाहर निकल आये और खुशी से चीखते हुए उन्हें खदेड़ने लगे। अचानक रामू और उसके लड़के आश्चर्य से थम गये।

“क्या कह रहे हो! एक आदमी जान बचाकर भागना नहीं चाहता।” वह चिल्लाकर बोला “मैं तुम्हारे पाले में आना चाहता हूँ।” इसी बीच तुषार की टुकड़ी को अपने हथियारों की आपूर्ति हो चुकी थी और जल्दी ही दोनों छावनियों के बीच भीषण जंग छिड़ गयी।

बड़े आकार के चीड़-शंकु सभी दिशाओं में सरसरा रहे थे, जब भी शरीर से टकराते, जोर से चुभते। लेकिन दर्द भरी चीख-चिल्लाहट कहीं से सुनायी नहीं दे रही थी। सिर्फ जुगल चीख रहा था। वह दो शिविरों के बीच उछल-कूद रहा था और उस पर दोनों ओर से तगड़े प्रहार हो रहे थे।

एक चमत्कार



नन्हा प्रशान्त आगे वाली सीढ़ी पर बैठा हुआ रो रहा था। वह तेज आवाज में नहीं रो रहा था बस खुद में ही धीरे-धीरे सुबक रहा था।

“क्या हुआ?” मैंने पूछा

“दादी माँ बाहर गयी हैं,” प्रशान्त ने उदास होकर कहा और उसकी नन्ही देह काँप गयी।

“तुम्हें दादी माँ की जरूरत किसलिए पड़ गयी?” मैंने जानना चाहा।

“उनसे कुछ बताना है,” प्रशान्त ने समझाया।

“क्या बहुत जरूरी बात है?” मैंने उससे आगे पूछा।

“हाँ, बहुत जरूरी है,” प्रशान्त बिना हिचके एकदम से कह उठा। उसकी देह फिर से काँपने लगी, लेकिन आँसू नहीं बह रहे थे। इसे हम आँसूरहित सुबकना कहते हैं।

कुछ देर तक हम दोनों में से कोई भी नहीं बोला। “यह बहुत जरूरी है,” उसने

फिर दुहराया।

उसने सोचा होगा कि मैं उसकी बात पर विश्वास नहीं करूँगा और दोहराने से उसने उम्मीद की होगी, कि उसकी बात का थोड़ा वजन बढ़ जायेगा।

“क्या तुम वह बहुत जरूरी बात मुझे नहीं बता सकते?” मैंने उसे शान्त ढंग से सुझाया। प्रशान्त ने झटके से अपना सिर उठाया। उसकी आँसू भरी आँखों में आश्चर्य था। मेरा प्रस्ताव अनपेक्षित था। आश्चर्य की जगह राहत ने ले ली। लड़का जल्दी से उठ खड़ा हुआ और उत्सुकता से बताने लगा,

“अस्तबल में एक नन्हा-सा घोड़ा है, एक नन्हा भूरे रंग का घोड़ा... वह इतना प्यारा-प्यारा घोड़ा है, मैंने उसे बड़े वाले घोड़े के पेट से बाहर आते देखा... चाचा, मुझे बताओ, क्या यह कोई चमत्कार है?”

एक ही साँस में सब बाहर निकल आया। प्रशान्त चुप हो गया, मेरी तरफ आशा भरी निगाहों से देखा,

“हाँ प्रशान्त, यह एक चमत्कार है,” मैं बुदबुदाया। प्रशान्त ने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया और मुझे अपने साथ खींचने लगा।

“चलो, हम इस चमत्कार को देखने चलते हैं, यह चमत्कार बहुत प्यारा है, क्या आपने ऐसा कभी देखा है, चाचा, मैंने तो देखा नहीं.....”

उसका साथ देने के लिए मुझे दौड़ लगानी पड़ी। रास्ते में हमारी भेंट दादी माँ से हो गयी। प्रशान्त ने उनका हाथ कसकर पकड़ लिया और एक ही साँस में शब्द लुढ़कते हुए बाहर आने लगे,

“अस्तबल में एक नन्हा-सा घोड़ा है, एक नन्हा भूरे रंग का घोड़ा। वह इतना प्यारा-प्यारा घोड़ा है, मैंने उसे बड़े वाले घोड़े के पेट से बाहर आते देखा, दादी माँ, क्या यह कोई चमत्कार है?”

“यह चमत्कार ही है, प्रशान्त, मेरे प्यारे,” दादी माँ ने उसे आश्वस्त किया।

“यह एक अनोखा चमत्कार है, एक प्यारा चमत्कार, आओ, खुद चलकर देखो, दादी माँ, क्या तुमने पहले भी कोई चमत्कार देखा है, मैंने तो नहीं देखा...” और अब हम दोनों को प्रशान्त खीचें लिए जा रहा था।

सामूहिक फार्म के अस्तबल शिशु सदन से दूर नहीं थे। अध्यापिका बच्चों को वहाँ घोड़े दिखाने ले गयी थी। और तभी यह चमत्कार घटित हो गया था।

बच्चे अपनी अध्यापिका के साथ अभी भी वहीं थे। मैं डर रहा था कि दूसरे बच्चों को छोड़कर चले आने की वजह से प्रशान्त को कहीं डाँट न पड़े। लेकिन जब अध्यापिका ने हमें आते देखा तो वह मैत्रीभाव से मुस्कुरायी। वह इस बात से प्रसन्न लग रही थी कि प्रशान्त यह चमत्कार अपनी दादी माँ के साथ बाँटने चला गया था।

माथे पर सफेद तारक-चिन्ह वाला एक भूरा बछेड़ा (घोड़ी का तुरन्त जन्मा बच्चा-अनु.) मेरे सामने पड़ा था।

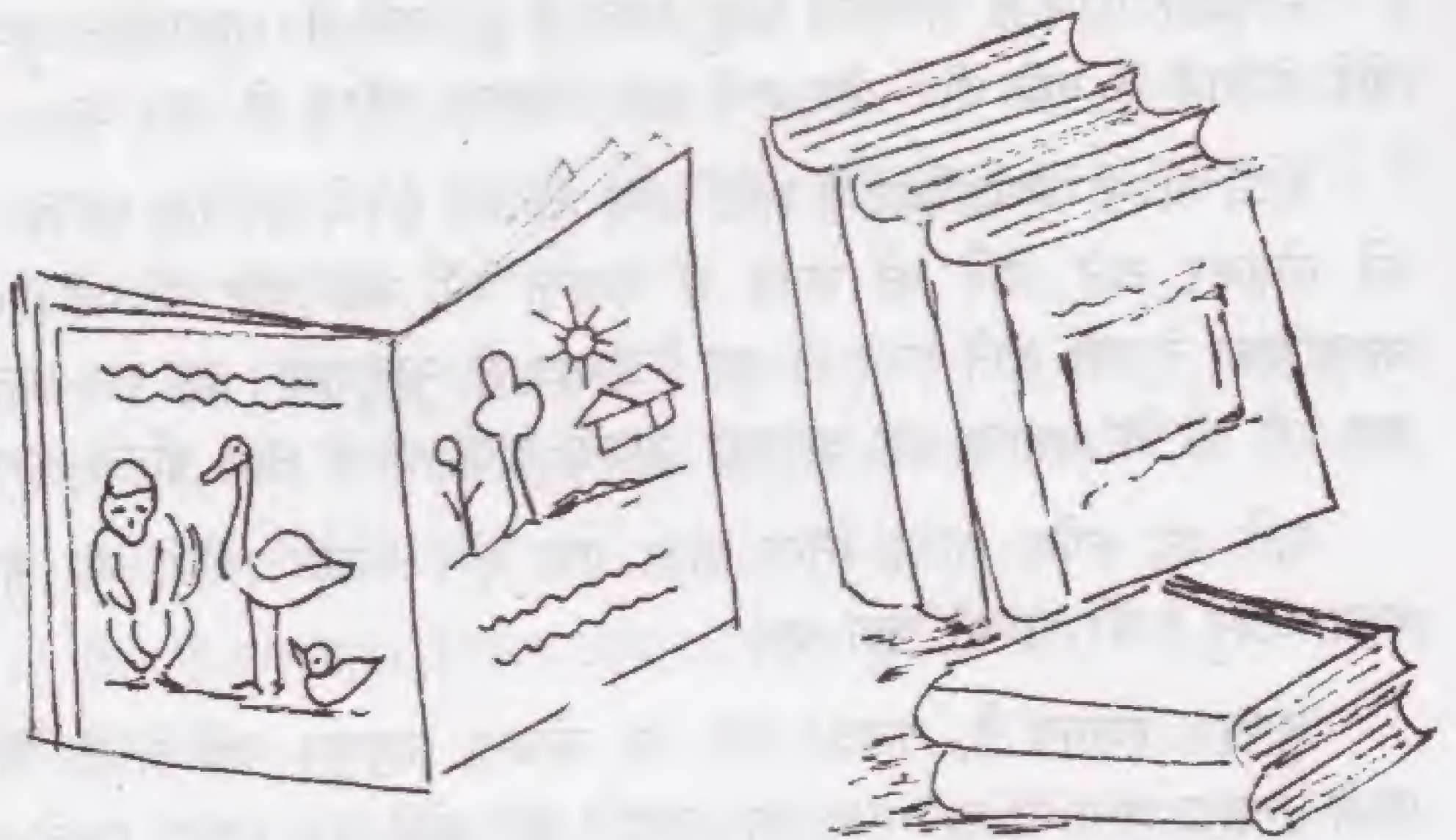
‘तुम्हारा स्वागत है, तारक! क्या यह सोचना अद्भुत नहीं लगता कि कुछ देर पहले तुम्हारा जन्म ही नहीं हुआ था। तुम्हारे छोटे-छोटे खुर, तुम्हारे पतले नाजुक पैर, तुम्हारी भूरी आँखें, तुम्हारा पूरा का पूरा वजूद,—यह चमत्कारों में चमत्कार है। यह प्रकृति है, वह महान जादूगर, जिसने तुम्हें यहाँ हमें खुशी प्रदान करने के लिए भेजा है। आने के लिए तुम्हारा शुक्रिया।’

ये शब्द मेरे कानों में उस समय गूँज रहे थे जब मैं पास ही अपनी मरम्मत वाली दुकान की ओर लपकता हुआ जा रहा था, “मैं दूसरे मजदूर साथियों को तुम्हारे बारे में बताऊँगा, नन्हे तारक,” मैंने मन ही मन सोचा।

और फिर मैं बिल्कुल लड़खड़ा गया।

अचानक, मुझे लगा कि वह प्रशान्त नहीं बल्कि खुद मैं ही हूँ या, कम से कम, हो सकता हूँ, जो सामने वाली सीढ़ी पर बैठा रो रहा था।

पुस्तकें चुनना



माँ ने वीरू को एक सन्देश देकर अपनी एक सहेली के पास भेजा। सहेली बहुत भली थी और उसने वीरू को अन्दर बुला लिया। बैठक में कदम रखते ही वह अचरज से ठिठककर रुक गया। वहाँ नीचे से ऊपर तक पुस्तकों से भरे खानों वाली दो लम्बी दीवारें थीं।

वीरू वहाँ खड़े होकर आँख फाड़े देखता रहा। अन्त में उसने पूछने का साहस किया,

“क्या आप के पास बच्चों लायक पुस्तकें भी हैं?”

“हाँ, मेरे पास है,” मित्र बोली, “यह खाना और यह वाला...”

“इतने ढेर सारे! मेरे पास इतने नहीं हैं,” वीरू को आश्चर्य हुआ।

“यदि तुम चाहो तो मैं पढ़ने के लिए कुछ किताबें दे सकती हूँ,” सहेली ने प्रस्ताव रखा। “तुम्हें किस तरह की किताबें सबसे अधिक पसन्द हैं?”

“मुझे... मालूम... नहीं....” वीरू ने स्वीकार किया।

“अच्छा, अगर ऐसी बात है तो तुम यह वाली क्यों नहीं ले लेते,” मित्र ने एक किताब निकाली।

“बाप रे!” वीरू पीछे हटा, “यह तो बहुत मोटी है।”

“अच्छा, तो फिर ठीक है शायद यह वाली...” मित्र ने सुझाव दिया।

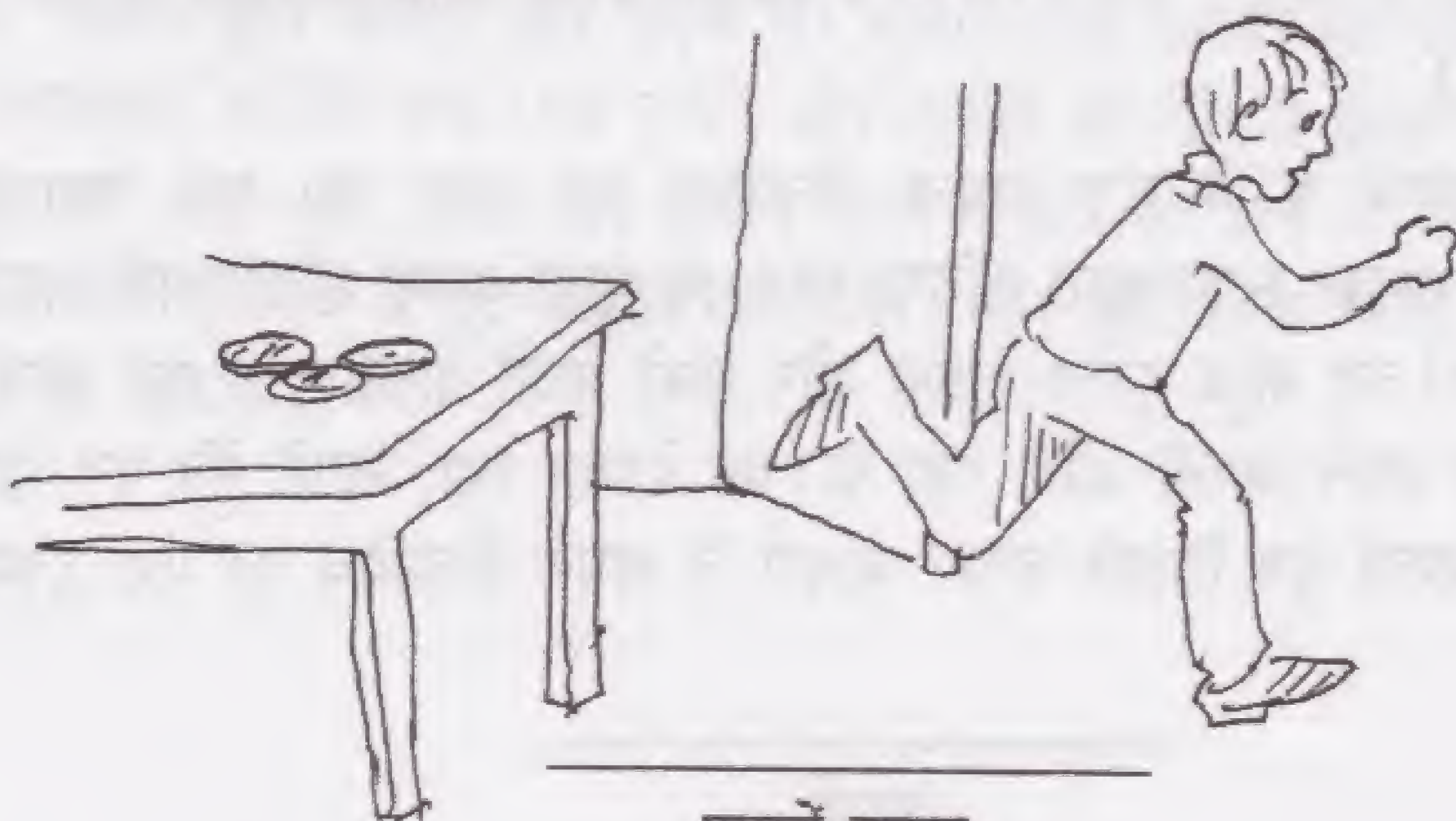
“यह बहुत बड़ी है मेरे बस्ते में आयेगी नहीं,” वीरू बच निकला।

“और इसके बारे में क्या ख्याल है?” सहेली ने एक तीसरी किताब बढ़ायी।

वीरू ने किताब के पन्ने पलटे और यह फैसला किया, “कितना कम इसमें पढ़ने के लिए है, इतनी बड़ी-बड़ी तस्वीरें और यह बहुत पतली है।”

“मैं देख रही हूँ, पुस्तकें चुनने के मामले में तुम अपनी पसन्द का काफी ख्याल रखते हो,” मित्र बोलीं। अच्छा हो अगर अगली दफा तुम एक जोड़ी पटरी और नापने वाला टेप लेकर चलो। उनसे तुम्हें अपना चुनाव करने में मदद मिलेगी।

वीरू ने माँ द्वारा भेजे रुक्के को मेज पर छोड़ दिया और हड़बड़ी में निकल गया। उसकी माँ की कैसी मूर्ख सहेली है, उसने सोचा।



पुस्तकें चुनना

आदर्श



आदर्श इतनी तेजी के साथ दौड़ने लगा जितना तेज उसके पैर उसे ले जा सकते थे। अचानक घास में पड़े पत्थर से वह टकरा गया। वह गिर पड़ा और उसका घुटना छिल गया। दर्द के मारे उसकी आँखों में आँसू आ गये। लेकिन आदर्श अपने आँसू पी गया, किसी तरह जतन करके अपने पैरों पर खड़ा हुआ और लँगड़ाते हुए चल पड़ा। चोट बुरी तरह टीस रहा था लेकिन उसे भाग कर पहुँचना ही था क्योंकि घात लगाये पिल्लों के बीच उसने अपनी पूसी का अटकना देख लिया था। ये वही पिल्ले थे, जो उस चर्बी से अपना पेट भरते जिसे आदर्श उनके लिए एक डाल से लटका दिया करता था।

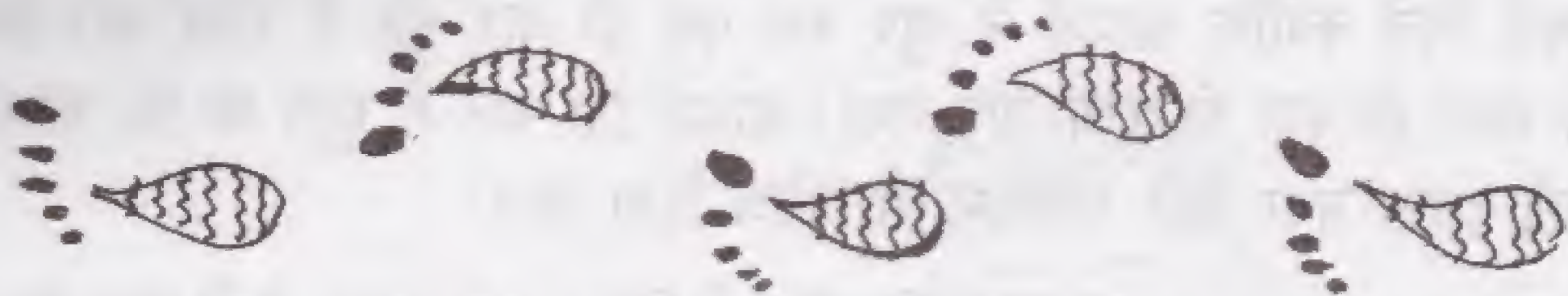
आदर्श बरामदे में बैठकर अपना सैन्डविच खा रहा था। एक बड़ा-सा मीट-सैन्डविच। उसका स्वाद बहुत बढ़िया था। एक कुत्ता आया और उसके सामने जाकर रुक गया। वह बहुत दुबला-पतला और झबरे बालों वाला कुत्ता था। आदर्श के सैन्डविच पर उसने अपनी आँख गड़ा दी। वह देखता रहा, अपने मुँह पर जीभ फिरायी और अपनी दुम हिलाने लगा। आदर्श ने अपने सैन्डविच का एक टुकड़ा

तोड़ा और कुत्ते को दे दिया। एक बार में गड़प और, बस खत्म। फिर आदर्श ने दूसरा टुकड़ा तोड़ा, फिर एक और, फिर एक और... और इस तरह कुत्ते को अच्छे खासे टुकड़े मिले क्योंकि आदर्श ने खुद बस एक ही बार मुँह में रखा था। जब सैन्डविच खत्म हो गया तो कुत्ता भाग गया। आदर्श इस बात से खुश था कि उसकी माँ ने उसे इतना बड़ा और स्वादिष्ट सैन्डविच दिया था।

आदर्श स्कूल जा रहा था। उसकी बिल्ली उसे बिदा करने गयी। दोनों मित्र पैदल चल पड़े, आदर्श आगे-आगे और बिल्ली ठीक उसके पीछे-पीछे चली। रास्ते में उन्हें दो लड़के मिले। लड़कों ने पूसी पर कंकड़ फेंकना शुरू कर दिया। आदर्श ने बिल्ली को उठाकर अपनी बाँह में थाम लिया। लड़कों को बिल्ली पर कंकड़ चलाने की हिम्मत नहीं हुई। “अब मैं क्या करूँ?” बिल्ली को अपनी बाँह में पकड़े-पकड़े आदर्श सोचने लगा। तब वह पीछे मुड़ा और घर आ गया। वह बिल्ली को घर के अन्दर ले आया। फिर वह स्कूल जाने के लिए वापस भागा। वह बहुत तेज दौड़ा लेकिन घंटी लग चुकी थी। लड़का डरा कि देर से आने के लिए उसे डाँट पड़ेगी। लेकिन उसकी अध्यापिका ने उल्टे उसकी प्रशंसा की। उन्होंने खिड़की से सब कुछ देख लिया था।

आदर्श अहाते की ओर भागा। एक मरियल-सा झबरा कुत्ता वहाँ लगातार जोर-जोर से भौकें जा रहा था। कुत्ते ने उसकी पूसी बिल्ली को घेर रखा था वह भाग नहीं पा रही थी। आदर्श ने कुत्ते को भगाने के लिए एक लकड़ी हाथ में ले ली, लेकिन कुत्ता उछला और लड़के पर गुराया। वह लकड़ी को अपने खुले दाँतों से पकड़कर खींचने लगा। वह गुराने और लकड़ी को दाँत से काटने लगा। आदर्श बहुत डर गया और चीख पड़ा लेकिन उसने लकड़ी को हाथ से जाने नहीं दिया। चीख और गुराहट से पूरा अहाता भर उठा। और पूसी बिना किसी की नजर पड़े वहाँ से खिसक गयी।

धारीदार कदमों की छाप



इस बड़े अपार्टमेण्ट वाले मकान में बारह परिवार रहते थे। पहली मंजिल में चार, दूसरी में चार और तीसरी मंजिल में चार। और बच्चे वहाँ ढेरों थे। अनन्त उनमें सबसे बड़ा था। वह 'तरुण पायनियर' की लाल टाई पहनता था और बाकी दूसरे छोटे थे और अपनी कमीजों पर लाल सितारा लगाते थे।

साधारण बातों के अलावा उस मकान में कभी कुछ घटा नहीं था जब तक कि एक दिन वहाँ अजीब-अजीब सी चीजें नहीं होने लगीं।

एक बार बूढ़ी श्रीमती हिंगोरानी ने अपना राखदान अपने कमरे के बाहर गलियारे में रखा। उनका इरादा उसे बाद में अहाते वाले कचरापेटी में, बाजार जाते समय, खाली कर आने का था। जब वह जाने के लिए तैयार हो कर निकलीं और राखदान उठाने को झुकीं तो आश्चर्य से वह ठिठक गयीं—राखदान बिल्कुल खाली हो चुका था।

दूसरी बार बूढ़ी श्रीमती हिंगोरानी ने नीचे जाकर अपनी डाक लाने का फैसला किया। दरवाजा खोलते ही उन्हें अपनी डाक पायदान पर रखी मिली।

एक दिन श्रीमती हिंगोरानी अपनी झूलनेवाली कुर्सी में बैठी पढ़ रही थीं। अचानक उनका ध्यान गया कि बारिश शुरू हो चुकी है। लेकिन उनके धुले हुए कपड़े बाहर ही रह गये थे! वह बाहर दौड़ी—पर उनके धुले कपड़े पहले से ही उनके दरवाजे के आगे रखे हुए थे — अखबार के एक साफ पन्ने पर, कायदे से तहाये गये और बिल्कुल सूखे हुए!

एक सुबह श्रीमती हिंगोरानी अहाते में बुनाई कर रही थीं। जल्दी ही उन्हें सर्दी महसूस होने लगी और वे उठकर अन्दर चली गईं। लेकिन अपना चश्मा वे बेन्च पर ही छोड़ आयी थीं। जब वे उसे ढूँढने भागी तो उन्होंने पाया कि किसी भले जीव ने

उसे उनके दरवाजे के हथे से बाँध दिया था।

ऐसी तमाम घटनाएँ बूढ़ी हिंगोरानी को खुशी देती थीं। और वे यह जानने को उत्सुक थीं कि इन सब के पीछे किसका फुर्तीला हाथ और परोपकारी हृदय हो सकता था।

एक दिन गलियारे में उनकी मुलाकात बूढ़ी मार्था से हुई। और यह पता चला कि लगभग उसी तरह की घटनाएँ उनके साथ भी हो रही हैं। उनके दरवाजे के बाहर गलियारे में पड़ा धूलभरा पोंछा साफ हो जाया करता है, उनके सायबान के सामने पड़ी रह गयी बाल्टीभर गिट्टी तीसरे मंजिल पर उनके दरवाजे के आगे तक सफर कर पहुँच जाया करती है।

बूढ़ी हिंगोरानी और अधिक उत्सुक हो उठीं। उन्होंने अपने तीन मंजिला मकान का रहस्य भेदने का पक्का मन बना लिया। और जाँच-पड़ताल कैसे की जाती है इसके बारे में उनकी थोड़ी बहुत जानकारी भी थी। अवकाश प्राप्त करने के पहले उन्होंने कई एक वर्षों तक जन-रक्षक चौकी पर काम किया था, जहाँ वे कार्यालय के कमरों की धूल झाड़ना, खिड़कियाँ साफ करना और दूसरे जरूरी बहुत से काम करती थीं।

बूढ़ी हिंगोरानी ने अपना राखदान दरवाजे के बाहर गलियारे में रखा और धड़ाक से दरवाजा बन्द कर दिया। तुरन्त बाद उन्होंने फिर से दरवाजा खोला, लेकिन इस दफा बिना आवाज, बहुत धीरे से, और अपना चश्मा तथा हाथ में एक किताब लिए पंजों के बल सीढ़ियाँ उतर कर अहाते में आ गयीं। वहाँ वे झाड़ियों के पीछे बेंच पर बैठ गयीं, जिससे पिछला दरवाजा और कचरापेटी भलीभाँति नजर आ सकें।

बसन्त ऋतु का सूर्य बहुत चमकदार था। बूढ़ी हिंगोरानी अपनी किताब पढ़ने लगी। बीच-बीच में अपनी आँख उठाकर वे अहाते में देख लिया करती थीं। सूरज की किरणें आरामदायक थीं, चिड़िया चहचहा रही थीं... और श्रीमती हिंगोरानी को झपकी आ गयी।

अचानक वे चौककर जाग पड़ी। और उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। किसी ने उनके घुटनों को उनके ही चारखानेदान कम्बल से, वही कम्बल जिसे वे ऊपर की अपनी झूलने वाली कुर्सी की पीठ पर छोड़ आयी थीं, ढक दिया था। कितनी

सहदयता है। सूर्य अब भी उनकी पीठ को गर्मा रहा था लेकिन उनके घुटने और पैर छाया में आ गये थे। पर यह कम्बल यहाँ नीचे तक आखिर आया कैसे?

वह बुजुर्ग महिला बिल्कुल चकरा गयी थी। ऐसी रहस्यमयी चीज तो किसी जासूस को भी मात कर सकती है फिर भला किसी जन-रक्षक चौकी से एक अवकाश प्राप्त सफाई करने वाली औरत की बिसात ही आखिर क्या है।

बूढ़ी हिंगोरानी ने अपनी चीजें समेटी और भीतर चली गयी। उनके दरवाजे के आगे एक और आश्चर्य उनका इंतजार कर रहा था—राखदान को खाली कर दिया गया था। उस बुजुर्ग महिला ने चाबी घुमायी और दहलीज पर ही ठिठक गयी—किसी ने उनके भूरे फर्श पर—दरवाजे से उनकी झूलनेवाली कुर्सी तक और फिर वापस दरवाजे तक धारीदार कदमों की छाप छोड़ दी थी।

रुकना जरा! अनन्त के नये बेआवाज जूते इसी तरह का निशान छोड़ते हैं। उसने एक दिन पहले ही तो उन्हें खरीदा था.. खुद अपनी जेब खर्च से, जैसा कि वह गर्वभाव से बता चुका था।

अब सारा मामला बिल्कुल साफ हो गया। उनके कमरे की चाभी उस बेन्च पर उनके बगल में ही रखी हुई थी। लेकिन अनन्त भला कैसे इन तमाम चीजों को खुद अकेले ही अंजाम दे सकता है? नहीं वह अकेला नहीं होगा। जाहिरातौर पर उसके ढेरों नन्हें सहायक होंगे।

कोई सन्देह नहीं, कि जन-रक्षक चौकी की नौकरी ने श्रीमती हिंगोरानी की काफी हद तक मदद की थी। श्रीमती मार्था के लिए पैर के उन निशानों का कोई मतलब न होता।

और वह बुजुर्ग महिला दबे होठों से मुस्कुरा पड़ी। क्या वे श्रीमती मार्था से यह सारा भेद खोल दें? नहीं। बेहतर होगा वे ऐसा न करें। श्रीमती मार्था दूसरों को बता देंगी और अनन्त का यह गौरवशाली राज फिर राज नहीं रह पायेगा।

चालाक मीकू



मीकू अक्टूबर के (रूसी क्रान्ति के बाद के-अनु.) बच्चों की सभा में हिस्सा लेकर लौटा था। प्रवेश हाल में अपना कोट उतारते हुए वह जोर से चिल्लाकर बोला ताकि सभी सुन लें,

“आज हम लोगों ने तरह-तरह का खेल खेला।”

“किस तरह के खेल?” पिताजी जानने को उत्सुक थे।

“शतरंज, और लम्बी छँलाग और...” मीकू पटर-पटर बोले जा रहा था। जाहिर था सबसे बड़ी खबर अभी आनी बाकी थी।

“कैसा रहा,” पिताजी ने पूछा।

“कुछ हार गये लेकिन मैं एक भी खेल में नहीं हारा,” मीकू का चेहरा खुशी से दमक रहा था।

“तुम बहुत होशियार निकले,” पिताजी बोले।

“तो सारे खेलों में तुम जीत गये?”

“नहीं, मैं नहीं जीता,” मीकू आँखों में चालाकी भरी चमक लिए बोल पड़ा।

“सब बराबरी पर रहे?”

“कोई बराबरी पर नहीं रहा।”

“मैं समझा नहीं,”...पिताजी बोले।

“मैं तो बिल्कुल खेला ही नहीं,” मीकू ने खुश होकर समझाया।

“क्यों?”

“क्या मैं होशियार नहीं हूँ? अगर मैं खेलता तो मैं हार भी सकता था?”

मीकू और अधिक प्रशंसा पाने का बेसब्री से इंतजार करता रहा। लेकिन उसके पिताजी गंभीर नजर आने लगे थे। आखिर में उन्होंने कहा,

“कितने दुख की बात है तुम अभी तक हारना नहीं सीख पाये हो।”

मीकू ने अचरज से आँख फाड़ी,

“क्यों भला?”

“ताकि एक दिन तुम जीतने के काबिल बन सको,” पिताजी ने स्पष्ट किया।

“लेकिन कैसे...”

“कोशिश करो और खुद समझ जाओगे,” पिताजी बात काटकर बोले।



चालाक मीकू

दोरंगी चालवाला अंजनी



अक्टूबर के (क्रान्ति बाद-अनु.) बच्चों के बीच चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। जब सबका काम पूरा हो गया तो उन सभी चित्रों को कक्षा की दीवारों पर चिपका दिया गया ताकि हर कोई देख सके। प्रतिभागी बच्चों को खुद ही यह फैसला करना था कि किसका चित्र सबसे बढ़िया है।

अंजनी रोहन के चित्र के आगे रुका। उसने चारों तरफ देखा, यह निश्चित करने के लिए कि रोहन कहीं आस-पास तो नहीं है और फिर कहा,

“कितना भद्दा चित्र है। जरा इस औरत को देखो उसका मुँह एक कान से दूसरे कान तक खिंचा हुआ है। उसके गाल हद से अधिक लाल हैं और उसके बाल बेतरतीब हैं।”

जब सभी ने चित्रों को खूब अच्छी तरह से देख लिया तब मुखिया जयन्त ने प्रत्येक बच्चे से पूछा कि उसे सबसे बढ़िया कौन-सा चित्र लगा और उसे अपने नोटबुक में लिख लिया। नहीं तो उसके लिए यह याद रखना सम्भव नहीं हो पाता कि हर चित्र को कितने अंक मिले हैं।

अब यह बताने की बारी अंजनी की थी कि उसे कौन-सा चित्र सबसे बढ़िया लगा। उसने चारों तरफ निगाहें दौड़ायी यह देखने के लिए कि रोहन वहाँ था या नहीं और रोहन वहीं मौजूद था। तब अंजनी ने कहा,

“रोहन का चित्र सबसे बढ़िया है। उसके चित्र में चौड़े मुस्कान वाली वह औरत कितनी खुश लग रही है, उसके गाल लाल और सुन्दर हैं और उसके बाल किस कदर फूले फूले से हैं।”

जयन्त ने सुना और मुँह ही मुँह में बड़बड़ाया। लेकिन फिर भी उसने रोहन के नाम के आगे टिक लगा दिया। यह इकलौता टिक का चिन्ह था जो रोहन को मिला था।

आखिरकार सभी चित्रों पर अंक-चिन्ह दिये जा चुके थे। जयन्त ने अपनी नोटबुक बन्द कर दी और कहा कि उसे अंजनी से कुछ बात करनी है लेकिन इससे पहले वह कुछ कहता रोहन उनके पास आया और अंजनी से कहने लगा,

“तुम दुरंगी चाल चलते हो, अंजनी। यही शब्द कुछ लोगों के बारे में मेरी दादी कहा करती थीं। परन्तु मैं कभी जान नहीं पाया था कि आखिर इसका असली मतलब क्या है। तुम्हारा शुक्रगुजार हूँ कि तुमने इसे इतनी अच्छी तरह मुझे समझा दिया।”

रोहन पीछे घूमा और वहाँ से चल दिया।

“कैसी घटिया-सी बात है कि हमारी कक्षा में चुगल-खोरी होती है। रोहन से मेरी मित्रता को इसने चौपट कर डाला,” अंजनी ने कडुआहट से सोचा।

बिचारा लड़का यह नहीं जानता था कि रोहन ने उसकी बात सुन ली थी जब वह मेज के नीचे अपना रबर ढूँढ़ रहा था।

जयन्त भी वहाँ से चल दिया। रोहन ने वह सारी बात कह दी थी जो वह कहना चाहता था।

तकरार



अक्टूबर (क्रान्ति बाद वाले-अनु.) बच्चों के दल के नेता जीशान ने सभा कक्ष में खुलने वाले दरवाजे को धक्का देकर खोला और ठिठककर रुक गया। धींगामुश्ती कर रहे दो लड़कों से उसका मार्ग बन्द हो गया था। हाँफते और गुस्से से फुफकारते वे एक-दूसरे को लात मार रहे थे और नोच-खसोट रहे थे।

जीशान ने उन्हें अलग किया और झिड़कते हुए कहा “सुनो लड़कों, यह कोई तरीका नहीं है....”

कुश चिल्लाया,

“अमर कहता है कि मैं...”

और अमर चीखा,

“कुश कहता है कि मैं...”

“अच्छा तो यह बात है,” जीशान ने उन्हें बीच में टोका।

“हाथ मिलाओ और दोस्ती कर लो।”

आज्ञाकारी ढंग से लड़कों ने हाथ मिलाया, करीब-करीब लपकते हुए।

लेकिन जैसे ही एक बार हाथ मिलाना खत्म हुआ कुश तुरन्त चीखा,

“लेकिन अमर कहता है कि मैं...”

और अमर चिल्लाया,

“पर कुश कहता है कि मैं...”

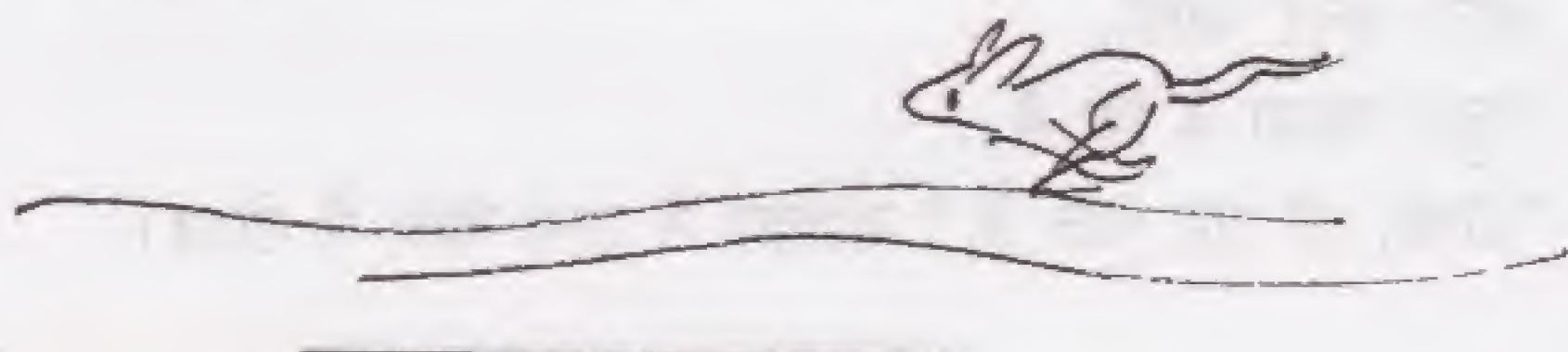
“अच्छा तो यह बात है,” जीशान ने इस बार उन्हें और अधिक गंभीरता से टोक दिया। “अपनी-अपनी जगह जाकर बैठो, बाद में बात करेंगे।”

पिछले दिन बच्चे जंगल में घूमने गये थे। आज वे उसके बारे में चित्र बना रहे थे। जीशान कुछ यहाँ मदद करते कुछ वहाँ सलाह देते, एक मेज से दूसरे मेज के बीच घूम रहा था।

कुश ने एक चीड़ वृक्ष बनाया और अमर की ओर चुपके से निगाह डाली। अमर, जिसने अभी-अभी एक गिलहरी का चित्र पूरा किया था, कुश की ओर कनखी से देखा। कुश ने अपने चीड़ वृक्ष के नीचे खरहे की पगडंडी बनायी और अमर पर नजर डाली। अमर ने अपने गिलहरी के पंजों के बीच एक शंकु का चित्र खींचा और कुश की तरफ देखा। सहसा कुश को याद हो आया कि किस प्रकार उसने और अमर ने बर्फ का आदमी बनाया था। अमर को वह सैंडविच याद आ गया जिसे उन दोनों ने एक दिन पहले ही बाँटकर खाया था। उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा।

“कुश और अमर, क्या तुम दोनों अब यहाँ आ सकते हो;” सभी चित्रों को जमा करने के बाद जीशान ने आदेश दिया। लेकिन वे लड़के पहले ही जा चुके थे। खिड़की से बाहर देखते हुए जीशान को एक तेजी से गुजरती पीले रंग की स्लेज की झलक दिखी। कुश आगे की ओर बैठा था और उसके ठीक पीछे अमर था।

“अच्छा तो यह बात है,” जीशान मन ही मन बोला और खुशदिली से मुस्कुराया।



सुनहरा सिक्का



‘ओह!’ तरुण जोर से बोल पड़ा

“अरे!” पीटर चिल्ला उठा

वे दोनों सिक्का उठाने के लिए तेजी के साथ नीचे झुके। लेकिन उनका सिर आपस में जोर से टकराया और वे नीचे अपने नितम्बों के बल गिर पड़े। और उनके बीच वह सुनहरा खूबसूरत पाँच कोपेक का सिक्का धूलभरी पगडंडी पर पड़ा रहा।

“यह मेरा है,” तरुण चिल्लाया और अपना हाथ बढ़ा दिया।

“नहीं, यह तुम्हारा नहीं है, मैंने इसे तुमसे पहले देख लिया था,” पीटर ने भौंहे सिकोड़ी और तरुण का हाथ झटक दिया।

“नहीं, पहले मैंने इसे देखा था,”

“तुमने नहीं, मैंने इसे देखा था।”

लड़के उछलकर अपने पैरों पर खड़े हो गये और एक दूसरे को आग बरसाती आँखों से इस तरह देखा जैसे दो लड़ाकू मुर्गे।

ठीक उसी समय गार्गी दौड़ती हुई आयी। ताली पीटते हुए वह खुशी से चीख पड़ी।

‘अरे, वाह! यह रहा, मेरा खोया हुआ पाँच कोपेक का सिक्का। मैं यहाँ रस्सी कूद रही थी लगता है तभी यह मेरी जेब से सरक गया।’

लड़के शान्त हो गये। अब तकरार करने के लिए कुछ बचा न था।

“क्या तुमने इसे ढूँढा है?” गार्गी ने तरुण से पूछा और उदारता दिखाते हुए वादा किया “जब मैं मिठाई खरीदूँगी तो थोड़ा तुम्हें भी दूँगी।”

“इसे तरुण ने नहीं मैंने ढूँढा था,” पीटर का गुस्सा फिर से भड़कने लगा था।

“क्या मतलब है तुम्हारा,..... मैंने ढूँढा था!” तरुण फूट पड़ा।

“तुमने नहीं! मैंने ढूँढा था!” पीटर ने हार नहीं मानी।

“तो तुमने ढूँढा था!” तरुण ने मुक्का लहराया तब गार्गी ने कहा,

“ठीक है, ऐसा लगता है कि तुम दोनों ने ही इसे ढूँढा है। इसलिए तुम दोनों का शुक्रिया।”

और वह सिक्का हाथ में और हाथ अपने फ्राक की जेब में रखे टहलते हुए निकल गयी। लड़के शान्त हो गये। उनके पास लड़ने की कोई वजह ही नहीं बची थी।

सबसे सुन्दर क्रिसमस का पेड़



बर्फ बड़े-बड़े नर्म रोयेदार फाहों में गिर रही थी। एक लड़का और एक लड़की सड़क पर जल्दी-जल्दी चले आ रहे थे। वे उत्साह में थे क्योंकि वे एक क्रिसमस का पेड़ लाने जा रहे थे। एक ऐसा क्रिसमस का पेड़ ढूँढ़ना था जो सबसे अधिक सुन्दर हो।

बर्फबारी के बीच उन्हें एक रोशनी वाली खिड़की से बाहर झाँकती एक बुर्जुग महिला की झलक दिखी। उसके बाल ऐसे शुभ्रधवल थे मानो उन्हें क्रिसमस हिम से सजाया गया हो।

सबसे सुन्दर क्रिसमस का पेड़

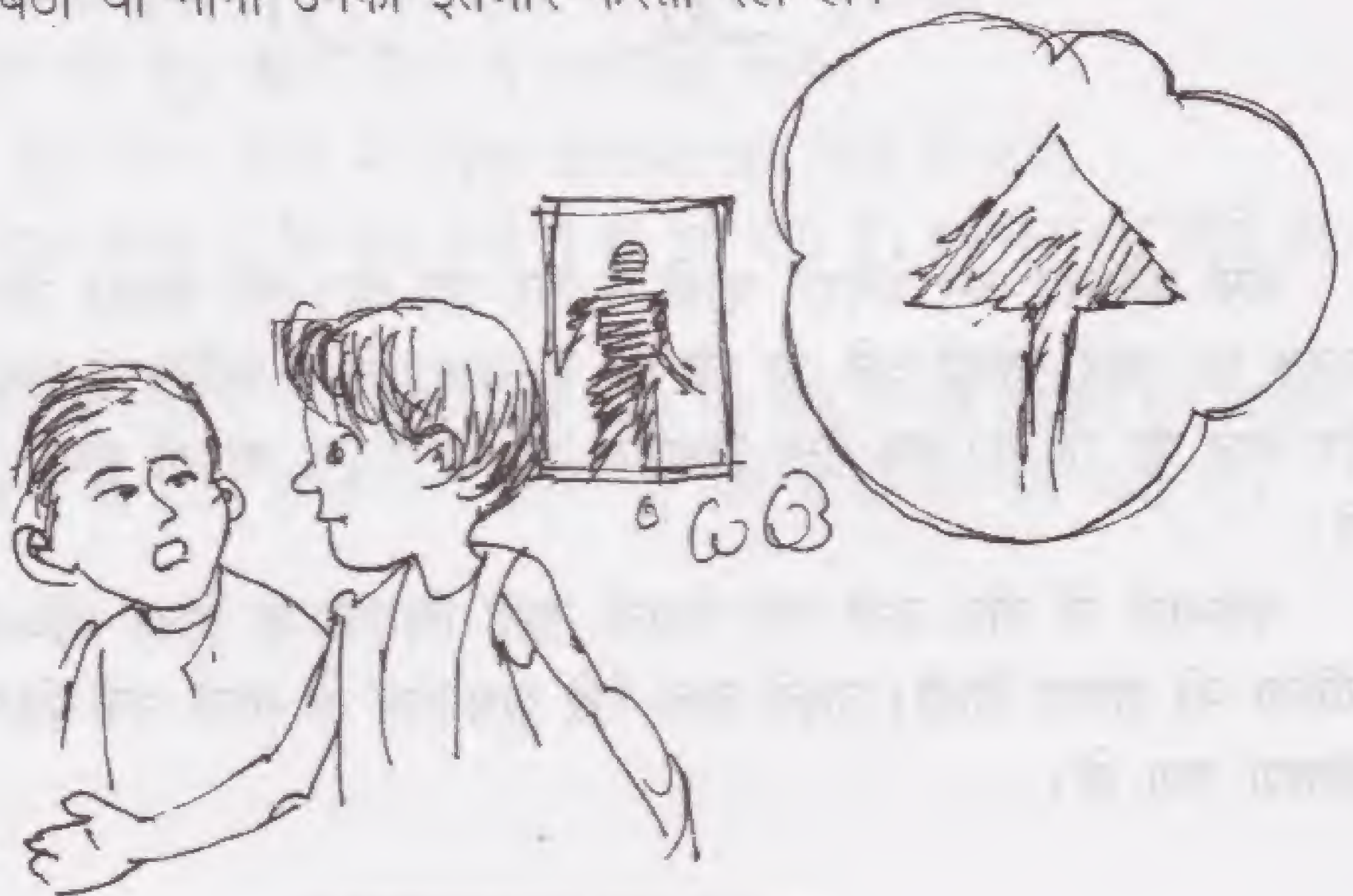
लड़का और लड़की ठिठके। वह बुर्जुग महिला उनकी ओर देखकर मुस्कुरायी। उसने आहिस्ता से अपना हाथ उठाया और अभिवादन में हिलाया।

वे हड़बड़ी में चलते रहे। उनके पास गँवाने के लिए समय नहीं था, सबसे सुन्दर क्रिसमस का पेड़ उनका इंतजार कर रहा था।

और उन्हें अपना पेड़ मिल भी गया। एक छोटा प्यारा-सा क्रिसमस का पेड़। लौटते हुए वे उसी मकान से गुजरे। खिड़की से अभी भी रोशनी आ रही थी। और बर्फ की फाहों के बीच से वह बुर्जुग महिला उन्हें देखकर मुस्कुरायी। वह मुस्कुरायी और अपना सिर हिलाया मानो कह रही हो, “हाँ, यह वास्तव में उन सबमें सबसे अधिक सुन्दर क्रिसमस का पेड़ है जिन्हें मैंने अभी तक देखा है।”

बच्चों ने उसकी तरफ हाथ हिलाया और अपनी राह चलते रहे। उन्हें भागकर पहुँचाना था क्योंकि क्रिसमस की शाम होने ही वाली थी। और उन्हें अभी भी अपने सबसे सुन्दर क्रिसमस पेड़ के लिए सबसे सुन्दर सजावट का सामान खरीदना बाकी ही था।

यह चीज उन्हें फिर से उस सफेद बर्फीली सड़क पर वापस ले आयी। वे हड़बड़ी में थे। फिर भी वे उस जानी पहचानी खिड़की के पास रुके। वह बूढ़ी महिला अभी भी वहाँ ऐसे बैठी थी मानो उनका इंतजार करती रही हो।



सबसे सुन्दर क्रिसमस का पेड़

लड़के और लड़की ने अपनी नाक खिड़की के ठण्डे शीशे से भिड़ा दी। बूढ़ी महिला ने अपना हाथ उठाया और यूँ हिलाया मानो उनके गालों को सहला रही हो। बच्चे समझ गये थे कि वह चल नहीं सकती क्योंकि वह पहिये वाली कुर्सी पर बैठी हुई थी।

फिर वे क्रिसमस की पड़ती बर्फ के बीच गुम हो गये। लेकिन वे बहुत जल्दी ही वापस लौटे। लड़के ने अपनी बगल में क्रिसमस के लिए सजावटी सामानों का एक डिब्बा दबा रखा था और लड़की मोमबत्तियों का डिब्बा पकड़े हुई थी। वे बर्फ के बीच से निकलते दिखायी पड़े और उनकी आँखें उस जानी-पहचानी सी खिड़की को तलाशने लगीं।

उन्होंने फिर एक बार खिड़की के शीशे पर अपनी नाक दबायी और फिर वह बूढ़ी महिला उन्हें देखकर जिंदादिली से मुस्कुरायी। उसने उनकी ओर देखकर सिर हिलाया, आहिस्ता से और बार-बार मानो आने के लिए उनका शुक्रिया कर रही हो।

लेकिन उसके कमरे में क्रिसमस का कोई पेड़ नहीं था। इसे वे अब पक्के तौर से जान गये थे।

बर्फ के बीच वह लड़का और लड़की फिर से गायब हो जाते इसके पहले उन्होंने पीछे मुड़कर देखा। उस महिला ने खिड़की के शीशे से अपना माथा सटा लिया था और उसकी ठहरी नजरें उनका पीछा कर रही थीं।

बच्चे घर आ गये। लेकिन जल्दी ही वे फिर सड़क पर दिखायी पड़े। लड़का पेड़ थामे चल रहा था और लड़की ने बगल में दो बक्से दबा रखे थे।

उस बुर्जुग महिला के दरवाजे पर वे पंजों के बल धीरे से चढ़े। उन्होंने क्रिसमस पेड़ को सजाया और दरवाजे पर दस्तक दी। तब उन्होंने दरवाजे को धकेलकर खोला। पेड़ को उठाकर अन्दर रखा और जल्दी से निकल गये।

क्रिसमस की सफेद नर्म रौएदार बर्फ अब भी पड़ रही थी।

लड़का और लड़की खुश थे कि उन्होंने सबसे सुन्दर क्रिसमस का पेड़ और सबसे खूबसूरत सजावट ढूँढ़ निकाला था। वे यह भी जानते थे कि नया पेड़ और नयी

सबसे सुन्दर क्रिसमस का पेड़

सजावट जिसे वे खरीदने जा रहे थे उतना खूबसूरत नहीं होगा। पर इससे उनका मन उदास नहीं हुआ। नहीं, बल्कि उन्हें खुशी महसूस हुई। वे जानते थे कि उन्होंने सही काम किया है।

मुझे नहीं पता कि वह लड़का और लड़की कौन थे? शायद वह तुम और तुम्हारी बहन हो या हो सकता है वह तुम और तुम्हारा भाई हो?



अनुराग ट्रस्ट



अनुराग ट्रस्ट